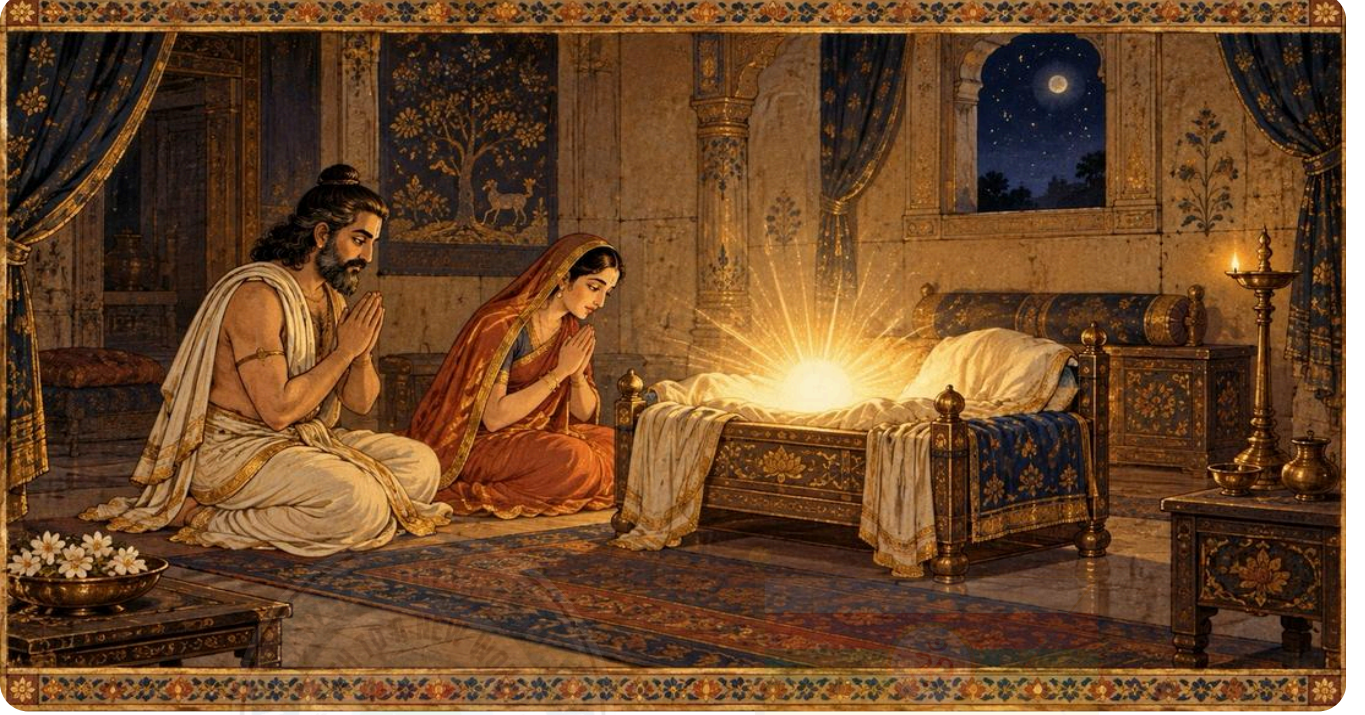


श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध अध्याय 24: कृष्णावतार

5 October 2026



सौ नामों एवं सात पीढ़ियों से यदु-वंश की धारा इस एक तट की ओर प्रवाहित हो रही थी: वसुदेव एवं देवकी का घर, जहाँ स्वयं परम भगवान् अन्ततः जन्म लेना चुनते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं एवं शिक्षाओं की एक श्रद्धापूर्ण यात्रा। नवम स्कन्ध का यह चौबीसवाँ अध्याय वह शिखर है जिस ओर इस स्कन्ध की समस्त वंशावलियाँ अब तक बढ़ रही थीं। शुकदेव वृष्णि एवं अन्धक के माध्यम से यदु-वंश को शूर एवं उसके दस पुत्रों तक ले जाते हैं, शूर की पुत्री पृथा की कोमल एवं परीक्षा-भरी कथा सुनाते हैं, और अन्ततः, सब के केन्द्र में, वसुदेव एवं देवकी के आठवें पुत्र को स्वयं भगवान् हरि घोषित करते हैं। अध्याय समाप्त होता है शुकदेव के अपने ही विस्मय-भरे स्तवन से — भगवान् क्यों अवतरित होते हैं, और उनकी महिमा को मात्र सुनना संसार से थके हुए प्राणी के लिए औषधि क्यों बनता है। यह, उचित रूप से, नवम स्कन्ध का अन्तिम अध्याय है — वह द्वार जिससे होकर भागवत अब श्री कृष्ण की लीलाओं में प्रवेश करता है।

अध्याय-परिचय

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण

- स्कन्ध: 9 (नवम स्कन्ध)
- अध्याय: 24 (चतुर्विंश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: भगवान् श्री कृष्ण, परम पुरुषोत्तम
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — सम्पूर्ण कथा सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में शौनक ऋषि एवं ऋषि-समुदाय को सुनाई गई
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: यदु, वृष्णि एवं अन्धक के वंश, विशेष रूप से शूर का घर एवं अन्ततः मथुरा के शूरसेनों में वसुदेव एवं देवकी का घर
- केन्द्रीय विषय: वसुदेव के परिवार का वंश-वर्णन, जो देवकी के आठवें पुत्र के रूप में भगवान् के अवतरण में परिणत होता है, साथ में शुकदेव द्वारा उस अवतरण की महिमा
- मुख्य श्लोक-परास: नवम स्कन्ध, अध्याय 24, श्लोक 1–67
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

पिछले अध्याय में शुकदेव ने ययाति के बड़े पुत्रों के वंशों का सर्वेक्षण किया था, अन्त में यदु के वंश की ओर मुड़ते हुए, यह घोषित करते हुए कि इस वंश को मात्र सुनना मनुष्य को पाप से मुक्त करता है, क्योंकि इसी में स्वयं परम भगवान् एक दिन मानव-रूप में अवतरित होंगे। चौबीसवाँ अध्याय अब उस प्रतिज्ञा को उसकी पूर्णता तक ले जाता है।

वृष्णि एवं अन्धक के कुल

शुकदेव ने विदुरथ से यदु-वंश को आगे बढ़ाया, जिससे भजमान, शिनि, स्वयम्भोज एवं हृदीक उत्पन्न हुए। वृष्णि की अनेक शाखाओं में, अन्धक के पुत्रों ने कई पीढ़ियों तक कुल को आगे बढ़ाया, पुनर्वसु तक, जिसके पुत्र अहुक ने देवक एवं उग्रसेन को जन्म दिया। देवक की ही पुत्रियाँ, जिनमें एक का नाम देवकी था, एक ही पुरुष — वसुदेव — को विवाह में दी गई, वह पिता जो, यह जाने बिना भी, स्वयं भगवान् को अपने घर में प्राप्त करने की प्रतीक्षा कर रहा था। इस विस्तृत परिवार में अन्यत्र, स्वफल्क के वंश ने अक्रूर को जन्म दिया, जबकि देवमीढ़ के वंश ने शूर को जन्म दिया, जिसका घर अब इस अध्याय का पूर्ण ध्यान आकर्षित करता है।

शूर का परिवार एवं वसुदेव का नामकरण

देवमीढ़ के पुत्र शूर की पत्नी मरीषा थी, और उससे उसने दस निर्दोष पुत्र उत्पन्न किए — वसुदेव, देवभाग, देवश्रवा, अनक, सृज्जय, श्यामक, कंक, शमीक, वत्सक एवं वृक — तथा पाँच पुत्रियाँ, जिनमें पृथा थी, जो बाद में कुन्ती नाम से जानी गई। वसुदेव को जन्म से ही चिह्नित किया गया था: उनके जन्म के समय आकाश में देवताओं के नगाड़े एवं बड़े ढोल बजे, और इस कारण वे आनकदुन्दुभि कहलाए — “जिनके जन्म पर स्वर्ग के नगाड़े बजे।”

वसुदेवं हरेः स्थानं वदन्त्यानकदुन्दुभिम् ।

पृथा च श्रुतदेवा च श्रुतकीर्तिः श्रुतश्रवाः ॥ ३० ॥

राजाधिदेवी चैतेषां भगिन्यः पञ्च कन्यकाः ।

कुन्तेः सख्युः पिता शूरो ह्यपुत्रस्य पृथामदात् ॥ ३१ ॥

*vasudevaṁ hareḥ sthānaṁ vadanty ānakadundubhim pṛthā ca śrutadevā ca śrutakīrtiḥ
śrutaśravāḥ rājādhidevī caiteṣāṁ bhagīnyaḥ pañca kanyakāḥ kunteḥ sakhyuḥ pitā śūro hy
aputrasya pṛthām adāt*

अर्थ: वसुदेव को “आनकदुन्दुभि” कहा जाता है, भगवान् हरि का चुना हुआ निवास-स्थान। पृथा, श्रुतदेवा, श्रुतकीर्ति, श्रुतश्रवा एवं राजाधिदेवी उनकी पाँच भगिनियाँ थीं; और उनके पिता शूर ने पृथा को अपने निःसन्तान मित्र कुन्ती को दे दिया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 24, श्लोक 30-31)



यदु-कुल के दस निर्दोष पुत्रों के पिता शूर अपनी पुत्री पृथा को अपने निःसन्तान मित्र राजा कुन्ती को देते हैं, जबकि उनका अपना पुत्र वसुदेव जन्म से ही भगवान् हरि के चुने हुए निवास-स्थान के रूप में चिह्नित होता है (श्लोक 30-31)।

पृथा का वरदान एवं सूर्यदेव का आगमन

पृथा, अब अपने पालक-पिता के नाम से कुन्ती कहलाती थी, ने एक बार ऋषि दुर्वासा की अतिथि-रूप में उनकी इतनी भक्तिपूर्ण सेवा की कि उन्होंने प्रसन्न होकर उसे एक दुर्लभ मन्त्र सिखाया, जिससे देवताओं को इच्छानुसार आमन्त्रित किया जा सकता था। युवा एवं केवल उसकी सत्यता की परीक्षा करने की उत्सुकता से, उसने स्वयं सूर्यदेव का आवाहन किया, और विस्मय से उसने देखा कि वे उसी क्षण उसके सामने प्रकट हो गए। भयभीत होकर उसने उन्हें लौट जाने की प्रार्थना की, यह कहते हुए कि उसने उन्हें केवल परीक्षा हेतु बुलाया था। परन्तु सूर्यदेव अपने आगमन का उद्देश्य पूर्ण किए बिना लौटने को तैयार न हुए।

अमोघं देवसन्दर्शमादधे त्वयि चात्मजम् ।

योनिर्यथा न दुष्येत कर्ताहं ते सुमध्यमे ॥ ३४ ॥

amoghaṁ deva-sandarśam ādadhe tvayi cātmajam yonir yathā na duṣyeta kartāhaṁ te sumadhyame

अर्थ: “हे सुमध्यमे, किसी देवता का दर्शन कभी व्यर्थ नहीं होता। मैं तुझमें एक पुत्र स्थापित करूँगा, और यह सुनिश्चित करूँगा कि तेरा कुमारीत्व अक्षुण्ण रहे।” (नवम स्कन्ध, अध्याय 24, श्लोक 34)

ऐसा कहकर सूर्यदेव ने अपना तेज उसके गर्भ में स्थापित किया एवं स्वर्ग लौट गए; और बिना किसी प्रसव-पीड़ा के, उसी क्षण एक बालक, जो स्वयं एक और सूर्य के समान तेजस्वी था, उसके गर्भ से जन्मा। संसार की निन्दा से भयभीत होकर, युवा पृथा ने, अत्यन्त दुःख के साथ, उस नवजात शिशु को एक नदी की धारा को सौंप दिया। वर्षों पश्चात्, यही पृथा को, अपने सच्चे पराक्रम के अनुरूप, पाण्डु ने पत्नी रूप में ग्रहण किया।



युवा पृथा की जिज्ञासा से परीक्षित होकर, सूर्यदेव उसके सामने प्रकट होते हैं एवं कृपा एवं सम्मान के साथ, उसके सम्मान को स्पर्श किए बिना, उसे पुत्र प्रदान करने का वचन देते हैं (श्लोक 34)।

शुकदेव यहाँ नहीं रुके; परिवार की कथा आगे बढ़ी। पृथा की भगिनियाँ करुष, केकय, अवन्ति एवं चेदि में विवाहित हुई — चेदि के विवाह से, श्रुतश्रवा एवं दमघोष के माध्यम से, आगे चलकर शिशुपाल का जन्म हुआ — इसके पश्चात् कथा पुनः वसुदेव के अपने ही परिवार की ओर लौट आई।

वसुदेव को अनेक पत्नियाँ एवं पुत्र

वसुदेव केवल देवकी से ही विवाहित नहीं थे। पौरवी, रोहिणी, भद्रा, मदिरा, रोचना, इला, देवकी एवं अन्य — देवकी के घर में जन्मी भगिनियाँ — सभी उनकी पत्नियाँ बनीं। रोहिणी से स्वयं बलराम उत्पन्न हुए, गद आदि अन्य पुत्रों के साथ; पौरवी, मदिरा, रोचना एवं इला से और भी अनेक पुत्र हुए, प्रत्येक इस विशाल एवं सौभाग्यशाली वृक्ष की एक पत्ती के समान, इतने अधिक कि शुकदेव के अनुसार एक सावधान स्मृति भी उन्हें पूर्ण रूप से धारण नहीं कर सकती।

आठवाँ पुत्र स्वयं भगवान् हैं

तब, अपनी आवाज़ को बढ़ाए बिना, शुकदेव इस सम्पूर्ण वंशावली के केन्द्र में पहुँचे। देवरक्षिता एवं सहदेवा के माध्यम से वसुदेव को सत्रह और पुत्र हुए। परन्तु देवकी के माध्यम से ही वह सच्चा आश्चर्य घटित हुआ।

प्रवरश्रुतमुख्यांश्च साक्षाद् धर्मो वसूनिव ।

वसुदेवस्तु देवक्यामष्ट पुत्रानजीजनत् ॥ ५३ ॥

कीर्तिमन्तं सुषेणं च भद्रसेनमुदारधीः ।

ऋजुं सम्मर्दनं भद्रं सङ्कर्षणमहीश्वरम् ॥ ५४ ॥

अष्टमस्तु तयोरासीत् स्वयमेव हरिः किल ।

सुभद्रा च महाभागा तव राजन् पितामही ॥ ५५ ॥

*pravara-śruta-mukhyāṁś ca sākṣād dharmo vasūn iva vasudevas tu devakyām aṣṭa putrān
ajījanat kīrtimantaṁ suṣeṇaṁ ca bhadrasenaṁ udāra-dhīḥ ṛjuṁ sammardanaṁ bhadraṁ
saṅkarṣaṇaṁ ahīśvaram aṣṭamas tu taylor āsīt svayam eva hariḥ kila subhadrā ca mahābhāgā
tava rājan pitāmahī*

अर्थ: देवकी के माध्यम से, वसुदेव ने आठ पुत्र उत्पन्न किए, ठीक वैसे ही जैसे धर्म ने आठ वसुओं को उत्पन्न किया था — कीर्तिमान, सुषेण, भद्रसेन, उदार-बुद्धि ऋजु, सम्मर्दन, एवं भगवान् संकर्षण, जो स्वयं सर्पों के ईश्वर हैं; और उनमें आठवें स्वयं भगवान् हरि ही थे। हे राजन्, महाभागा सुभद्रा उनकी भगिनी थी, तुम्हारी अपनी पितामही। (नवम स्कन्ध, अध्याय 24, श्लोक 53-55)



देवकी से वसुदेव को जन्मे आठ पुत्रों में — कीर्तिमान, सुषेण आदि, एवं भगवान् संकर्षण के साथ — शुकदेव आठवें को स्वयं भगवान् हरि घोषित करते हैं (श्लोक 53-55)।

शुकदेव ने इस कथन को स्वयं ही बोलने दिया: वसुदेव एवं देवकी का आठवाँ पुत्र, सम्पूर्ण लोकों के भगवान्, इस परिवार में जन्म ले चुका था जिसकी हमने अभी-अभी हर शाखा का अनुसरण किया। प्रत्येक विवाह, प्रत्येक पुत्र, प्रत्येक दी एवं ली गई भगिनी — बिना परिवार में किसी एक आत्मा के भी पहले से जाने — इसी की ओर ले जा रही थी।

भगवान् क्यों अवतरित होते हैं

तब शुकदेव वंशावली से महिमा-गान की ओर मुड़े, एक ऐसा सत्य बोलते हुए जिसकी ओर भक्त बारम्बार लौटता है।

यदा यदा हि धर्मस्य क्षयो वृद्धिश्च पाप्मनः ।

तदा तु भगवानीश आत्मानं सृजते हरिः ॥ ५६ ॥

yadā yadā hi dharmasya kṣayo vṛddhiś ca pāpmanaḥ tadā tu bhagavān īśa ātmānaṁ sṛjate hariḥ

अर्थ: जब-जब इस संसार में धर्म का क्षय होता है एवं पाप की वृद्धि होती है, तब-तब सर्वशक्तिमान् भगवान् हरि स्वयं प्रकट होते हैं। (नवम स्कन्ध, अध्याय 24, श्लोक 56)

न ह्यस्य जन्मनो हेतुः कर्मणो वा महीपते ।

आत्ममायां विनेशस्य परस्य द्रष्टुर्आत्मनः ॥ ५७ ॥

यन्मायाचेष्टितं पुंसः स्थित्युत्पत्त्यप्ययाय हि ।

अनुग्रहस्तन्निवृत्तेरात्मलाभाय चेष्टते ॥ ५८ ॥

*na hy asya janmano hetuḥ karmaṇo vā mahīpate ātma-māyāṁ vineśasya parasya draṣṭur
ātmanaḥ yan māyā-ceṣṭitaṁ puṁsaḥ sthity-utpatty-apyayāya hi anugrahas tan-nivṛtter ātma-
lābhāya ceṣyate*

अर्थ: हे पृथ्वी के शासक, भगवान् — जो समस्त के स्वतन्त्र, अनासक्त साक्षी हैं — के जन्म या कर्म का कोई कारण उनकी अपनी इच्छा एवं अपनी सृजन-शक्ति के अतिरिक्त कुछ नहीं। वही दिव्य शक्ति प्रत्येक देहधारी आत्मा के जन्म, स्थिति एवं विनाश को नियन्त्रित करती है; परन्तु भगवान् की अपनी कृपा का उद्देश्य है कि आत्मा उस चक्र से मुक्त होकर अपने सच्चे स्वरूप को प्राप्त करे। (नवम स्कन्ध, अध्याय 24, श्लोक 57-58)

यहाँ शुकदेव राजा परीक्षित के सामने अध्याय का सबसे गहन सत्य खोलते हैं: वसुदेव के परिवार में भगवान् का अवतरण किसी पूर्व-कर्म के ऋण से बाध्य नहीं था, जैसे एक सामान्य आत्मा का जन्म कर्म द्वारा बाध्य होता है — वे केवल इसलिए आते हैं क्योंकि वे आना चाहते हैं। और वही अवतरण, जो उन्हें कुछ भी नहीं देता, हमें सम्पूर्ण रूप से कृपा के रूप में दिया जाता है: जहाँ उनकी शक्ति का अवैयक्तिक कार्य हर आत्मा को जन्म-मृत्यु के चक्र में घुमाता रहता है, वहाँ उनका अपना वैयक्तिक अवतरण एवं अपनी कृपा ही वह एकमात्र द्वार है जिससे एक आत्मा अन्ततः अपने घर, अपने आत्म-स्वरूप, को लौट सकती है। यही वह सबसे गहन कारण है जो भागवत कृष्ण के जन्म के लिए देता है — यह नहीं कि भगवान् को जन्म लेने की आवश्यकता थी, बल्कि यह कि हमें उनकी आवश्यकता थी।

श्री कृष्ण एवं बलराम पृथ्वी का भार हरते हैं

भगवान् क्यों आते हैं यह समझाने के पश्चात्, शुकदेव ने बताया कि उनका आगमन क्या सिद्ध करेगा।

अक्षौहिणीनां पतिभिरसुरैर्नृपलाञ्छनैः ।

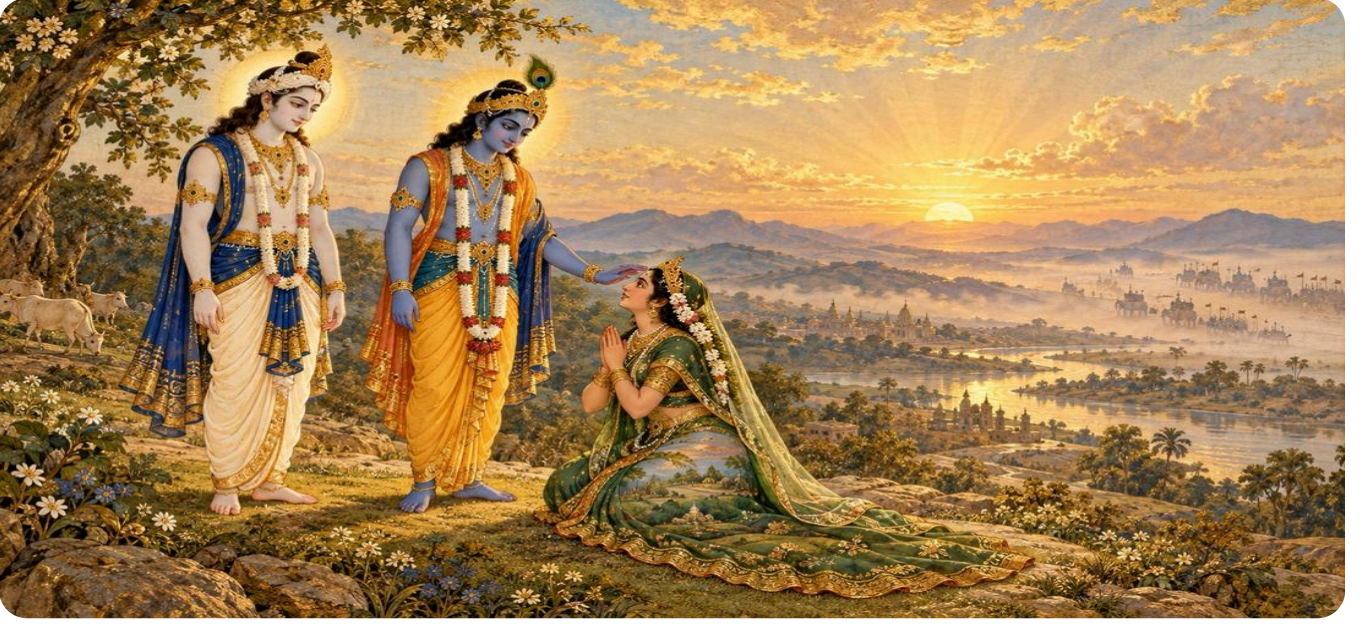
भुव आक्रम्यमाणाया अभाराय कृतोद्यमः ॥ ५९ ॥

कर्माण्यपरिमेयाणि मनसापि सुरेश्वरैः ।

सहसङ्कर्षणश्चक्रे भगवान् मधुसूदनः ॥ ६० ॥

*akṣauhiṇīnām patibhir asurair nṛpa-lāñchanaiḥ bhuva ākramyamāṇāyā abhārāya kṛtodyamaḥ
karmāṇy aparimeyāṇi manasāpi sureśvaraiḥ saha-saṅkarṣaṇaś cakre bhagavān madhusūdanaḥ*

अर्थ: राजाओं के मात्र बाह्य रूप धारण किए हुए असुरों की विशाल सेनाओं के भार से दबी हुई पृथ्वी को राहत की आवश्यकता थी; और उस भार को हल्का करने के लिए, भगवान् मधुसूदन ने, भगवान् संकर्षण के साथ, ऐसे कार्य किए जिन्हें स्वर्ग के शासक भी मन से पूर्णतः ग्रहण नहीं कर सके। (नवम स्कन्ध, अध्याय 24, श्लोक 59-60)



शासकों के रूप में छिपे असुरों से पीड़ित पृथ्वी को मुक्त करने के लिए, भगवान् श्री कृष्ण एवं भगवान् संकर्षण ऐसे कार्य करते हैं जो देवताओं की समझ से भी परे हैं (श्लोक 59-60)।

इन्हीं कार्यों के द्वारा, शुकदेव ने आगे कहा, भगवान् ने इतनी पवित्र महिमा का प्रसार किया कि वह अकेली ही कलियुग में जन्म लेने वाली आत्माओं के दुःख, शोक एवं अन्धकार को दूर करने में पर्याप्त है — वह युग जो परीक्षित के सुनते समय अभी आया नहीं था, परन्तु जिसकी छाया उनके सामने, जैसे हमारे भी सामने, आज भी पड़ी हुई है।

कानों को औषधि देने वाला अमृत

यहीं, अध्याय के अन्त में, शुकदेव वे शब्द बोलते हैं जिन्हें भक्त सर्वाधिक अपने हृदय में ले जाना चाहता है।

यस्मिन् सत्कर्णपीयुषे यशस्तीर्थवरे सकृत् ।

श्रोत्राञ्जलिरुपस्पृश्य धनुते कर्मवासनाम् ॥ ६२ ॥

yasmin sat-karṇa-pīyūṣe yaśas-tīrtha-vare sakṛt śrotrāñjalir upaspr̥śya dhunute karma-vāsanām

अर्थ: अपने जुड़े हुए कानों की खोह को दो खुली हथेलियों के समान बनाकर, एवं उनकी महिमा की उस श्रेष्ठ पवित्र धारा से — जो धर्मात्माओं के कानों के लिए अमृत है — मात्र एक बार पान करके, मनुष्य पूर्वकर्मों की उस गहरी प्रवृत्ति को त्याग देता है जो अन्यथा आत्मा को बाँधती है। (नवम स्कन्ध, अध्याय 24, श्लोक 62)

अपने मधुर वचनों, अपनी मुस्कानों एवं अपने प्रत्येक अंग में सुन्दर रूप के द्वारा, शुकदेव ने कहा, भगवान् ने अपने ही यदु-कुल के बन्धुओं को एवं कुरुओं एवं पाण्डवों दोनों को इतना आनन्द दिया कि स्त्री-पुरुष सर्वत्र अपनी आँखों से उनके मुख की सुन्दरता का पान करते रहे, फिर भी कभी तृप्त नहीं हुए।

श्री कृष्ण के कार्य एवं अपने धाम को प्रत्यागमन

शुकदेव ने अध्याय को भगवान् के सम्पूर्ण पार्थिव जीवन पर एक तीव्र, प्रेमपूर्ण दृष्टि डालते हुए समाप्त किया — जन्म लेकर, व्रज के चरागाहों में ले जाए गए, मथुरा लौटे, जहाँ उन्होंने अपने शत्रुओं का वध किया, विवाह किए, पुत्र उत्पन्न किए, एवं अपनी ही आराधना के यज्ञ सम्पन्न किए जिससे उनका अपना वैदिक मार्ग संसार के सामने चमक उठे।

पृथ्व्याः स वै गुरुभरं क्षपयन् कुरूणा-
मन्तःसमुत्थकलिना युधि भूपचम्ब्वः ।
दृष्ट्या विधूय विजये जयमुद्विघोष्य
प्रोच्योद्धवाय च परं समगात् स्वधाम ॥ ६७ ॥

*pr̥thvyāḥ sa vai guru-bharaṁ kṣapayan kurūṇām antaḥ-samuttha-kalinā yudhi bhūpa-camvāḥ
dṛṣṭyā vidhūya vijaye jayam udvighoṣya procyoddhavāya ca param samagāt sva-dhāma*

अर्थ: कुरुओं में उत्पन्न हुए आन्तरिक कलह के माध्यम से पृथ्वी के भार को हल्का करते हुए, उन्होंने युद्ध-भूमि में एकत्र राजाओं की सेनाओं को अपनी दृष्टि से ही बहा दिया; विजय अर्थात् अर्जुन की विजय को उच्च स्वर में घोषित किया; उद्धव को परम सत्य प्रदान किया; और तब, शान्त मन से, अपने ही दिव्य धाम को लौट गए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 24, श्लोक 67)



पृथ्वी का भार हल्का करने के पश्चात्, भगवान् अपने प्रिय भक्त उद्धव को परम सत्य प्रदान करते हैं एवं शान्त मन से अपने ही दिव्य धाम को लौट जाते हैं (श्लोक 67)।

इस श्लोक के साथ शुकदेव ने न केवल अध्याय को, बल्कि सम्पूर्ण नवम स्कन्ध को समाप्त किया, जिसका समापन-वाक्य इसे “यदु की सन्तति का वर्णन” कहता है, जो महर्षि वेदव्यास द्वारा कथित सूर्य एवं चन्द्र वंशों के बृहत् इतिहास का एक भाग है। नवम स्कन्ध यहीं समाप्त होता है; और इसके साथ, भागवत दशम स्कन्ध की सीमा पर खड़ा है, उन्हीं लीलाओं को पूर्ण रूप से सुनाने को तैयार जिन्हें इस अध्याय ने केवल झलक के रूप में दिखाया है।

इस अध्याय को प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् का अवतरण कभी बाध्य नहीं, केवल इच्छापूर्वक होता है। हर अन्य आत्मा के विपरीत, जिसका जन्म कर्म द्वारा नियन्त्रित होता है, भगवान् के अवतरण का कोई कारण उनकी अपनी इच्छा के अतिरिक्त नहीं (श्लोक 56-57)।
2. उनकी कृपा, उनकी शक्ति नहीं, हमें मुक्त करती है। वही दिव्य शक्ति जो आत्माओं को जन्म-मृत्यु के चक्र में घुमाती रहती है, वही, भगवान् की वैयक्तिक कृपा के माध्यम से, आत्मा को अन्ततः अपने स्वरूप में लौटने का साधन भी बनती है (श्लोक 58)।
3. भगवान् सच्चे भार हरने आते हैं। जब पृथ्वी ऐसे शासकों के भार से कराह रही थी जो केवल नाम में राजा थे, भगवान् ने उसे मुक्त करने के लिए वे कार्य किए जो देवताओं की समझ से भी परे थे (श्लोक 59-60)।
4. भगवान् की महिमा को एक बार सुनना ही पवित्र कर देता है। शुकदेव भगवान् को सुनने की तुलना, मात्र एक बार भी, कानों से अमृत पीने से करते हैं — जो पुरानी आदतों एवं पूर्वकर्मों की पकड़ को ढीला करने के लिए पर्याप्त है (श्लोक 62)।
5. इस संसार के साधारण परिवार असाधारण को धारण कर सकते हैं। पीढ़ियों के विवाहों, पुत्रों एवं शान्त घरेलू इतिहास के माध्यम से, एक पूर्णतः मानवीय वंश, किसी के भी पूर्वानुमान के बिना, वही घर बन गया जिसमें भगवान् ने जन्म लिया (श्लोक 53-55)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

एक वंश-वृक्ष को, नाम-दर-नाम, पीढ़ी-दर-पीढ़ी, अपने भीतर — उसमें रहने वाले किसी को भी ज्ञात न होते हुए — भगवान् के अपने अवतरण का बीज धारण करते देखना अत्यन्त हृदय-स्पर्शी है। शूर नहीं जानता था, अपने नगाड़े-घोषित पुत्र का नाम आनकदुन्दुभि रखते समय, कि यही बालक एक दिन शिशु कृष्ण को अपनी बाहों में उठाएगा। पृथा नहीं जानती थी, नदी के ऊपर उस बालक पर रोते हुए जिसे वह रख नहीं सकी, कि उसका दुःख एक दिन उसके सम्पूर्ण परिवार के प्रति एक कहीं बड़ी कृपा से उत्तर पाएगा। परन्तु भागवत इसमें से किसी को भी दुर्घटना नहीं मानता; वह इसे कृपा के रूप में देखता है, जो शान्तिपूर्वक साधारण जीवनों के माध्यम से कार्य कर रही है, व्यावहारिक कारणों से तय किए गए विवाहों एवं कुल-सम्मान हेतु नामित सन्तानों के माध्यम से। सम्भवतः यही अध्याय की सबसे कोमल शिक्षा है: कि हम भी एक ऐसी कथा के भीतर जी रहे हैं जिसका सच्चा रूप हम अभी नहीं देख सकते, एवं कि भगवान् का हाथ हमारी अपनी शान्त गृहस्थियों में भी ठीक उतनी ही धीरता एवं निश्चयता से कार्य कर सकता है जितना वह शूर एवं वसुदेव के घर में कार्य कर रहा था।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, शुकदेव के ही परामर्श का अनुसरण करते हुए, अपने कानों को, भले ही क्षण भर के लिए, भगवान् की महिमा को अर्पित करें — उनकी लीलाओं का एक श्लोक पढ़ें या सुनें, अथवा पूर्ण एकाग्रता से दोहराएँ, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,” एवं उस ध्वनि को एक श्रवणरत हृदय में अमृत के समान बैठने दें। फिर, यह स्मरण करते हुए कि किस प्रकार एक सम्पूर्ण परिवार का असाधारण-रहित इतिहास भगवान् के अपने जन्म का पात्र बन गया, अपने ही घर एवं दैनिक जीवन को देखें — वह कितना भी साधारण प्रतीत हो — एवं उसे मौन रूप से भगवान् को अर्पित करें, यह विश्वास करते हुए कि वे उसके माध्यम से उतने ही निश्चित रूप से कार्य कर सकते हैं जितना उन्होंने शूर एवं वसुदेव के घर के माध्यम से किया।

उपसंहार

जो अध्यायों पहले राजाओं एवं राजवंशों की एक लम्बी सूची के रूप में आरम्भ हुआ था, वह यहाँ अपने सच्चे उद्देश्य पर पहुँचता है: वसुदेव एवं देवकी का घर, जहाँ जन्मा आठवाँ शिशु स्वयं परम भगवान् के रूप में प्रकट होता है, अपनी स्वतन्त्र इच्छा से अवतरित होकर पृथ्वी का भार हल्का करने एवं हर सुनने वाली आत्मा को अपनी महिमा का पवित्र करने वाला अमृत प्रदान करने हेतु। शुकदेव का समापन-स्तवन हमें स्मरण कराता है कि भगवान् का जन्म उनसे कुछ नहीं माँगता, परन्तु हमें सब कुछ देता है। इसके साथ, नवम स्कन्ध अपने समापन पर पहुँचता है, और भागवत स्वयं श्री कृष्ण की लीलाओं के द्वार पर खड़ा है।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण, नवम स्कन्ध, चतुर्विंश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञान • विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं संस्तुति के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-24-krishna-the-supreme-personality-of-godhead-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट